

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिककालीन शिक्षा की उपादेयता

डॉ. अजीत कुमार

सिंह सहायक प्राध्यापक, इस्लामिया टी. टी. (बी.एड.), कॉलेज, पटना, बिहार, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12334>

सारांश

वैदिककालीन शिक्षा प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था थी, जिसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक सामाजिक और आध्यात्मिक विकास करना था। इसके साथ-साथ चरित्र निर्माण करना भी था। वर्तमान समय में भी इसके अनेक सिद्धांत शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं मूल्य परक बनाने में उपयोगी होंगे। वैदिक शिक्षा में सत्य, अनुशासन, संयम, कर्तव्य, ईमानदारी, जैसे गुणों पर जोर दिया जाता था। आज के विद्यार्थी में इन सभी गुणों का होना नितांत आवश्यक है। वैदिक शिक्षा में गुरु और शिष्य के बीच सम्मानपूर्ण संबंध होता था। वैदिक शिक्षा में शरीर मन बुद्धि और आचरण के विकास पर ध्यान दिया जाता था। आधुनिक शिक्षा में भी शैक्षणिक ज्ञान के साथ खेल, योग, कला, स्वास्थ्य और व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने की जरूरत है। वैदिक शिक्षा में प्रकृति, वायु, जल और जीव जन्तुओं के प्रति सम्मान की भावना थी। वर्तमान पर्यावरण संकट के समय यह दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। वैदिककालीन शिक्षा के मूल्यपरक एवं मानव केंद्रित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। आधुनिक शिक्षा यदि वैज्ञानिक ज्ञान के साथ वैदिक शिक्षा के श्रेष्ठ मूल्यों को अपनाये तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण, नैतिक एवं जिम्मेदार व्यक्तित्व विकसित किया जा सकता है।

मूलशब्द: वैदिक शिक्षा, सर्वांगीण विकास, नैतिक मूल्य, गुरु-शिष्य संबंध, पर्यावरण संरक्षण

वैदिक काल (1500 ई०पू० – 600 ई०पू०) को भारतीय शिक्षा का स्वर्णिम काल कहा जाता है। उस समय शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं, बल्कि श्वा विद्या या विमुक्तये श्वा अर्थात् जो मुक्त करे वही विद्या थी। वर्तमान में जब शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित हो गया है, तब वैदिक शिक्षा दर्शन की पुनर्व्याख्या आवश्यक है। वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देना था। आधुनिक शिक्षा में भी इन तत्वों की आवश्यकता बनी हुई है। प्राचीन भारतीय शिक्षा-दर्शन की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता पर NCERT के अध्ययन में भी नैतिक शिक्षा, आत्म-विकास और समग्र विकास को महत्वपूर्ण माना गया है। भारत की नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक शिक्षा प्रणाली के मूलभूत दर्शन को आधुनिक 21वीं सदी की आवश्यकताओं के साथ जोड़कर शामिल किया गया है।

वैदिककालीन शिक्षा की विशेषताएँ

(क) **गुरुकुल प्रणाली:** छात्र गुरु के सानिध्य में प्रकृति के बीच रहकर शिक्षा प्राप्त करता था। यह आवासीय प्रणाली अनुशासन और आत्मनिर्भरता सिखाती थी।

(इ) **समग्र पाठ्यक्रम:** शिक्षा में परा विद्या – आध्यात्म और अपरा विद्या – वेद, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या आदि का समन्वय था।

(ब) **नैतिकता पर बल:** शिक्षा का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण था। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, संयम और सेवा को अनिवार्य माना जाता था।

(क) **मौखिक परम्परा:** श्रवण, मनन और निदिध्यासन की पद्धति से स्मृति, एकाग्रता और उच्चारण शुद्धता का विकास होता था।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता:

1. **मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन में:** योग, प्राणायाम, ध्यान और मंत्रोच्चारण जो वैदिक दिनचर्या का हिस्सा थे, आज WHO द्वारा भी तनाव प्रबंधन के उपाय के रूप में स्वीकृत हैं।

2. **नैतिक शिक्षा के संकट के समाधान में:** वर्तमान शिक्षा में मूल्य ह्रास एक बड़ी चुनौती है। वैदिक शिक्षा का धर्म आधारित दृष्टिकोण भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता को रोकने में सहायक हो सकता है।

3. **पर्यावरणीय चेतना में:** वैदिक दर्शन श्माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः की बात करता है। प्रकृति पूजन और यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश, आज जलवायु संकट में अत्यंत प्रासंगिक है।

4. **NEP 2020 के संदर्भ में:** NEP 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्य धारा में लाने, संस्कृत, अनुभववात्मक शिक्षा और समग्र विकास पर जोर देती है, जो सीधे तौर पर वैदिक मॉडल से प्रेरित है।

5. **चुनौतियाँ और समन्वय का मार्ग:** वैदिक शिक्षा को ज्यों का त्यों लागू करना संभव नहीं है। इसमें आधुनिक विज्ञान, तकनीक एवं समावेशी शिक्षा-विशेषकर स्त्री शिक्षा-का समावेश आवश्यक है। हमें प्राचीनता और आधुनिकता के समन्वय की आवश्यकता है जहाँ गुरुकुल के मूल्यों को डिजिटल क्लासरूम में जोड़ा जाए।

6. **चरित्र निर्माण:** सत्य, अनुशासन, दया, क्षमा और कर्तव्य जैसे मूल्यों का विकास।

7. **गुरु-शिष्य संबंध:** शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सम्मान, विश्वास तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन की भावना।

8. **आत्म-अनुशासन:** विद्यार्थी में संयम, नियमितता एवं जिम्मेदारी का विकास।

9. **समग्र व्यक्तित्व का विकास:** केवल पुस्तकीय ज्ञान के बजाय शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास पर जोर।

10. **सरल जीवन उच्च विचार:** अनावश्यक भौतिक प्रतिस्पर्धा से बचकर संतुलित जीवन की प्रेरणा।
11. **व्यवहारिक शिक्षा:** ज्ञान के साथ कौशल और जीवनोपयोगी कार्यों को महत्व।
12. **भारतीय संस्कृति का संरक्षण:** भारतीय ज्ञान, भाषा, परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों की समझ विकसित करना।
13. **आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वय:** वैदिक शिक्षा के उपयोगी मूल्यों को आधुनिक विज्ञान, तकनीक और लोकतांत्रिक शिक्षा के साथ जोड़ा जा सकता है।

वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम:

वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक था। इसमें समय एवं आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विषयों का अध्ययन कराया जाता था, जैसे— वेद, वेदांग, व्याकरण, दर्शन, गणित, ज्योतिष, इतिहास एवं पुराण, नीति एवं धर्म, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, संगीत तथा कला। इस प्रकार शिक्षा में ज्ञान के साथ जीवनोपयोगी और व्यवहारिक पक्ष को भी महत्व दिया जाता था।

सुझाव

वर्तमान परिप्रेक्ष्य (21वीं सदी) में वैदिक शिक्षा के मुख्य सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ मिलाकर लागू करने के लिए निम्नलिखित सुझाव हो सकते हैं—

1. व्यवहारिक और अनुभवात्मक शिक्षण:
2. मूल्य आधारित एवं नैतिक शिक्षण:
3. आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ एकीकरण:

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा का मूल लक्ष्य "अच्छा ज्ञान प्राप्त करने के साथ अच्छा मनुष्य बनना" था। इसमें शिक्षा को जीवन से जोड़ा गया था। वर्तमान समय में नैतिक पतन, अनुशासन की कमी और तनाव जैसी चुनौतियों के बीच वैदिक शिक्षा के चरित्र निर्माण, आत्म-अनुशासन, नैतिकता और समग्र विकास संबंधी विचार विशेष रूप से उपयोगी हो सकते हैं। हालाँकि आधुनिक शिक्षा में वैदिक व्यवस्था को पूरी तरह उसी रूप में लागू करना उचित नहीं होगा। इसके उपयोगी और मानवीय मूल्यों को आधुनिक विज्ञान, तकनीक, लोकतांत्रिक मूल्यों और समान अवसर की शिक्षा के साथ जोड़ना अधिक उपयुक्त होगा। वैदिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है। वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम वैदिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिकता पर आधारित था, जबकि वर्तमान में केवल भौतिकता है। अतः कहा जा सकता है कि वैदिक काल में समाज का स्वरूप पारिवारिक था जबकि वर्तमान में यही संबंध भौतिकता पर आधारित है।

निहितार्थ

वैदिक शिक्षा केवल प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन मात्र नहीं था बल्कि यह जीवन जीने की एक पूर्ण कला और सर्वांगीण विकास की प्रणाली थी। आज की 21वीं सदी में जहाँ शिक्षा केवल डिग्री परीक्षा और व्यावसायिक सफलता तक सीमित होकर रह गई है वैदिक शिक्षा प्रणाली के कई सिद्धान्त अत्यंत प्रासंगिक और दिशा-निर्देशन करने वाले हैं।

वैदिक शिक्षा के शाश्वत मूल्यों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधुनिक तकनीक और विज्ञान के साथ जोड़ना है। जब हम आधुनिक विज्ञान व तकनीक के साथ वैदिक मूल्यों और संस्कारों

का मेल करेंगे तभी एक संतुलित संवेदनशील और वैश्विक नागरिक का निर्माण संभव हो सकेगा।

आभार

मैं इस शोध पत्र के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए इस्लामिया टीचर्स ट्रेनिंग (बी.एड.) कॉलेज पटना भारत का आभारी हूँ।

संदर्भ

1. मदान पूनम (2008): ज्ञान एवं पाठ्यचर्या आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2. सिंह बी० पी० एवं सिंह, ओमपाल (2004): शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का विकास, मेरठ: लायल बुक डिपो।
3. पाण्डेय, नीरा एवं वर्मा, कविता (2015): अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, आगरा: राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
4. चौहान रीता एवं पाठक पी० डी० (2008): बाल्यावस्था एवं उसका विकास, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
5. मदान पूनम एवं त्यागी गुरसरनदास (2021): समसामयिक भारत और शिक्षा आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।